नाद-नर्तन
जर्नल ऑफ डांस एण्ड म्यूजिक

UGC-CARE Listed ISSN: 2349-4654
वर्ष : 13, अंक : 1, जनवरी 2025

नेपाल के कार्तिक नाच में प्रयुक्त ताल पद्धति–एक अनुशीलन

स्वजन रघुवंशी
शोधार्थी, भरतनाट्यम् विभाग, नृत्य संकाय, इन्दिरा कला संगीत विश्वविद्यालय, खैरागढ़ (छ.ग.)

सार-संक्षेप

नेपाल कला एवं संस्कृति से समृद्ध एक राष्ट्र है। संगीत-कला के आधार पर यदि बात करें, तो नेपाल में गायन, वादन और नर्तन की पृथक्-पृथक् शैलियाँ हैं। इस राष्ट्र में प्रचलित अधिकांश नृत्य शैलियों में से 'कार्तिक नाच' का विशेष महत्त्व है, जो नेपाल के मल्ल काल से प्रारंभ हुआ है, ऐसा माना जाता है। वास्तव में कार्तिक नाच 'नाट्य' परम्परा पर आधारित 'नृत्य-नाटिका' का एक प्रकार है, जो परम्परागत रूप से अपनी विशिष्टताओं के साथ विगत 400 वर्षों से प्रसिद्ध रहा है। नेपाली कला में 'नाच' का अर्थ 'नृत्य', 'नाटक' और 'नृत्य-नाटिका' से लिया जाता है। इस नृत्य-नाटिका में नेपाल के नेवाः समुदाय (काठमाण्डु घाटी की आदिवासी जनजाति) में प्रचलित तालों का प्रयोग विशेष रूप से किया जाता है। यह ताल पद्धति को 'दाफा संगीत' कहा जाता है, जो नेवाः समुदाय का अपना पृथक् संगीत है। इस संगीत कुछ भारतीय संगीत का प्रभाव भी देखने को मिलता है, क्योंकि नेपाल और भारत का प्राचीन समय से सांस्कृतिक सम्बन्ध प्रगाढ़ रहे हैं। इस लेख में कार्तिक नाच में प्रयुक्त ताल की ताल-लिपि (नोटेशन) और उन तालों की विशेषताओं, कार्तिक नाच में प्रयुक्त ताल विशेष और किए जाने वाले नृत्य के साथ-साथ भारतीय ताल पद्धति से समानता आदि बिन्दुओं पर अध्ययन किया जाना प्रस्तावित है।

प्रमुख शब्दः संगीत, कार्तिक नाच, दाफा संगीत, ताल और ताल-लिपि

शोध-पत्र

संगीत की पृष्ठभूमि को देखें, तो माना जाता है कि यह परंपरा अनादि काल से चली आ रही है। प्राचीन काल से लेकर आधुनिक काल तक भगवान की पूजा और उपासना के लिए संगीत (गायन, वादन और नर्तन) की परंपरा चली आ रही है इस परंपरा के कारण लोगों के मन में भक्ति का भाव जागृत होता है। इतना ही नहीं विश्व की लगभग सभी सभ्यताओं और संस्कृतियों में संगीत का महत्त्वपूर्ण भूमिका है, इसी प्रकार नेपाल की कला संस्कृति को विश्व में पहिचान कराने में नेपाल के ललितपुर के कार्तिक नाच की महत्त्वपूर्ण भूमिका है, जिसमें संगीत की तीनों विधाओं (गायन, वादन और नर्तन) के साथ-साथ नाट्य भी शामिल है। वर्तमान में, नर्तन को संगीत की शैली से एक अलग विधा के रूप में भी देखा जाता है। कार्तिक नाच एक संगीत से भरिपूर्ण नृत्य नाटिका है, जिसमें 60 से अधिक रागों, 13 प्रकार के ताल एवं विभिन्न वाद्ययन्त्र का प्रयोग किया जाता है।

कार्तिक नाच के पृष्ठभूमि

कार्तिक नाच नेपाल के एक बहुत लोकप्रिय, प्रसिद्ध पारंपरिक लोक, सांस्कृतिक, धार्मिक, ऐतिहासिक, तांत्रिक विधि एवं जातीय विविधता युक्त और लोक नाटक भी समावेशी नाच है। यह नाच ललितपुर के केंद्र मंगलबजार के 'कार्ति डबली' (पारंपरिक मंच) में किया जाता है। जिसे कहा जाता है। क्षेत्रीय भाषा में इस नाच को 'कार्ति प्याखँ' कहा जाता है। बिष्णु पुराण और लोक नाटिका पर आधारित इस नाच का मुख्य पात्र श्रीकृष्ण है और मुख्य नाच नृसिंह अवतार का है। यह एक पुरुष प्रधान नृत्य है। इस नृत्य में हिंदू और बौद्ध दोनों संप्रदाय शामिल हैं, जो धार्मिक सांप्रदायिकता को दर्शाता है। यह नृत्य मल्ल काल के दौरान शुरू हुआ था और इसमें तीन मल्ल-युग के राजाओं का योगदान है।

राजा सिद्धिनारसिंह मल्ल ने 8 दिन, उन का पुत्र श्री निवास मल्ल ने 7 दिन और उन का भी पुत्र योग नरेंद्र मल्ल ने 12 दिन मिलाकर 27 दिनों तक नृत्य करने की परंपरा स्थापित की। 17 कहानियों और लीलाओं को मिलाकर 27 दिनों तक दिखाया जाता था। परन्तु वर्तमान समय में समय परिस्थिति देखाया जाता है।

कार्तिक नाच में दिखाए जाने वाले नृत्य इस प्रकार हैं–

1.	सुदामा	7.	माकःसि मियेगु	13.	वराह अवतार
2.	भक्त सूरदास	8.	खुसि छिकेगु	14.	नृसिंह अवतार
3.	माधवानर लीला	9.	तिंखिका-छ्योध्वग्गी	15.	वस्त्रहरण लीला

4.	ल्यवःलाय्गु	10.	सति वनेगु-महामूर्ख	16.	दधि लीला
5.	च्वले खुदां-दांखुदां	11.	उषाहरण लिला	17.	बौद्ध अवतार
6.	कौलाखिचा	12.	जलशयन		

नेपाल का ताल पद्धति

नेपाल में संगीत के विकास पर दृष्टिपात करें तो इसका विकास नाट्याचार्य भरतमुनि द्वारा रचित नाट्यशास्त्र ग्रंथ से पहले हुआ माना जाता है, इस तथ्य की पुष्टि नाट्यशास्त्र के प्रवृति के प्रयोग को पसन्द के सन्दर्भ में चतुर्दशोध्यायः के 43 श्लोक से होती है। उस श्लोक में नेपाल के नाम का भी उल्लेख है। नेपाल में विभिन्न काल खण्डों में संगीत के इतिहास एवं स्थितियों के बारे में स्पष्ट रूप से नहीं मिले तभी 'नेपाल के संगीत को नेवा समुदाय के लोकप्रिय संगीत के रूप में समझा जाना चाहिए। नेवा संगीत में 'चच', 'चह', 'चो', 'चचा' जैसे शब्दों का उपयोग प्राचीन काल से संगीत में किया जाता रहा है' (गुरुवाचार्य 3) अनुमानित पंद्रह शताब्दियों से प्रचलन में आया हुआ नेवा समुदाय के दाफा संगीत मौलिकता और अलग अस्तित्व से भरा संगीत है। दाफा संगीत अपनी पद्धति को आत्मसात करके वर्तमान समय में भी आगे बढ़ रही है। दाफा गुरु त्रिरत्न मानन्धर के अनुसार–''दाफा, जो मल्ल काल के दौरान अच्छी तरह से प्रचलित था। खिँ वाद्य के ताल में निश्चित नियमों में रहकर रागों को लेना, गीत गाना और वाद्यवादन करना ही दाफा है। (मानन्धर) दाफा गीतों में नेपाल भाषा के अतिरिक्त संस्कृत और मैथिली भाषा का भी प्रयोग होता है। दाफा में जयदेव द्वारा लिखित 'गीत गोविंद' का प्रभाव भी देखने को मिलता है। 'गीत गोविंद' में उल्लेखित कृति अभी भी भजन के रूप में गाया जाते है।'' खिँ वाद्य का वनावत पखावज का जैसा होता है। कार्तिक नृत्य के वाद्य गुरु प्रद्युम्न कृष्ण श्रेष्ठ के अनुसार, ''कार्तिक नाच संगीत की लय और ताल के साथ वाद्यों के विभिन्न बोल में आंगिक संचालन करके नृत्य और नृत्य नाटिका के रूप में प्रस्तुत किया जाता है, जो वाद्य पर नियंत्रित होता है। कार्तिक नाच दाफा पद्धति पर आधारित नाच है, क्योंकि इस नाच में मुख्य वाद्ययंत्र खिँ का प्रयोग पारंपरिक रूप से होता है, और राग लेने का स्वरूप, गाने और वाद्ययंत्र बजाने की शैली भी दाफा अभ्यास के अनुसार ही होती है।'' (श्रेष्ठ)

कार्तिक नाच में प्रयुक्त ताल

काठमाँडौ घाटी के नेवाः समुदाय में विभिन्न प्रचलित एवं लोकप्रिय हैं। यहाँ के लोकप्रिय तालों में चो ताल, पलिमा ताल, जति ताल, ताल, एक ताल आदि है। यहाँ तालों का नाम एक ही होकर भी उनकी मात्रा, ताली, खाली और बोल स्थान के अनुसार अलग-अलग होती हैं। उत्तर भारतीय ताल पद्धति के जैसे एक निश्चित ठेका के वोल नहीं होती है। उदाहरण के लिए–

उत्तर भारतीय ताल पद्धतिः दादरा ताल

मात्रा= ६, विभाग=२ (३+३), ताली= १(१), खाली= १(४)

मात्रा	१ २ ३	४ ५ ६	१
ठेका/बोल	धा धि ना	धा त् ना	धा
ताली/खाली	x	o	x

(आजाद, 595)

नेवाः ताल :- चो ताल

मात्रा = ४, विभाग=२ (२+२), ताली= १ (१), खाली= १ (३)

मात्रा	१ २	३ ४	१
ताली/खाली	तिं	छु	तिं

कुछ स्थानों पर वाद्ययंत्र के बोल के अनुसार ठेके को बनाया जाता है। दाफा गुरु त्रिरत्न मानन्धर द्वारा लिखित 'हांडे दाफाया म्हसीका व म्येया स्वरलिपि' पुस्तक में उल्लिखित 'चो ताल' के 'खिँ' वाद्य के बोल को निम्नलिखित रूप में किया गया है। (मानन्धर)

मात्रा	१ २	३ ४	१
खिँ का बोल	थिं रथिं	-र ताधें	थिं
ताली/खाली	तिं	छु	तिं

कार्तिक नाच में प्रयुक्त तालों में किसी ठेके का प्रयोग नहीं किया जाता है। यहाँ केवल 'तिन्छु' की ध्वनि के आधार पर 'तिं' और 'छु' का प्रयोग किया जाता है। 'तिं' तालियों को तथा 'छ' खाली को इंगित करता है। यहाँ वर्णित ताल कार्तिक नाच के गुरु हरिमान श्रेष्ठ द्वारा लिखित पुस्तक 'कात्ति प्याखँ' में वर्णित ताल हैं और ताल पद्धतियों की लिपी गुरु प्रद्युम्न कृष्ण श्रेष्ठ द्वारा दिए गए सात्क्षातकार से लिखी गई है, जो इस प्रकार है– (हरिमान)

1. चो ताल

कार्तिक नृत्य में 'चो ताल' का प्रयोग सबसे अधिक होता है। उत्तर भारतीय ताल पद्धति में तीन ताल और दक्षिण भारतीय ताल पद्धति में आदि ताल को को 'सदावहार ताल' कहते हैं, ऐसे ही दाफा संगीत का तालों में चो ताल को 'सदावहार ताल' के नाम से भी जाना जाता है, क्योंकि चो ताल सबसे अधिक प्रयोग किया जाने वाला सरल ताल है। कार्तिक नाच में नर्तन पक्ष के प्रारम्भिक अभ्यास से लेकर वाद्ययन्त्र के प्रशिक्षण में भी चो ताल का ही प्रयोग होता है। डबली(रंगमंच) में नृत्य के क्रम में भी 'चो ताल' को ही अत्यधिक मात्रा में प्रयोग किया जाता है। कृष्णगण, महादेवगण के प्रवेश, बाथः प्याखं आदि नाच में यह ताल का प्रयोग होता है। दक्षिण भारतीय ताल पद्धति में चतुश्र जाती एक ताल–त क धी मी : 4 मात्रा का होता है। परन्तु इस ताल में एक ही विभाग होता है।

2. पलिमाँ ताल

'पलिमाँ' ताल को पल्मा ताल भी कहेते है, जिसका अर्थ होता है कमल का फूल है। इस लिए 'पलिमाँ' ताल' को शान्त, शुद्ध एवं सुन्दर ताल के रुप में लिया जाता है। इस ताल का प्रयोग 'ग्वारा' में होता है।

मात्राः ६, विभागः ३(२+२+२), तालीः २(१ और ३), खालीः १(५)

मात्रा	१ २	३ ४	५ ६	१
ताली/खाली	तिं	तिं	छु	तिं

यह ताल दक्षिण भारतीय ताल पद्धति का चतुश्र जाती 'रूपक ताल' (त क। त क दि मी) जैसा है। इस ताल में दों विभाग है, जिस में पहले विभाग में 2 मात्रा(द्रुतम) और द्वितीय विभाग में 4 मात्रा (लघु) है। परन्तु क्रिया करते समय में 2 2 2 मात्र के अंतर में बोला जाता है। दो घातम् (ताली) और एक पलटना (खाली) है।

3. एक ताल/कर्खा ताल

'एक ताल' मन्द गति में बजने वाले ताल है जो आनंदित प्रकार का होता है। कार्तिक नाच में इन्द्र गण के प्रवेश तथा अन्य नाच के प्रवेश में इस ताल का प्रयोग होता है। उषा हरण लीला के अन्तर्गत महादेव और कृष्ण के युद्ध के समय में एक चरण कर्खा ताल में भी नृत्य होता है। उत्तर भारतीय ताल पद्धति में दादर ताल जैसा है।

मात्रा = ६, विभाग=२ (३+३), ताली= १ (१), खाली= १ (४)

मात्रा	१ २ ३	४ ५ ६	१
ताली/ खाली	तिं	छु	तिं

4. जति ताल

बोलों को सुन्दर, श्रृंगारिक एवं उत्कृष्ट बनाने के लिए 'जति ताल' का प्रयोग किया जाता है। इस ताल नास (नटराज) के प्रिये ताल के रूप में भी लिया जाता है। इस ताल में स्थान अनुरूप ताली एवं खाली में भिन्नता देखने को मिलती है। कहीं पर ताली से प्रारंभ किया जाता है तो कही पर खाली से प्रारंभ किया जाता है। कार्तिक नाच में वाणासुर गण का प्रवेश, उषा विलाप, हिरण्यकश्यपु गण के प्रबेश आदि में इस ताल में नृत्य किया जाता है।

मात्राः ७, विभागः ३(३+२+२), तालीः २(४ और ६), खालीः १(१)

मात्रा	१ २ ३	४ ५	६ ७	१
ताली/खाली	छु	तिं	तिं	छु

उत्तर भारतीय ताल पद्धति रूपक ताल का जैसा स्वरूप है।

मात्राः ७, विभागः ३(३+२+२), तालीः २(४ और ६), खालीः १(१)

मात्रा	१ २ ३	४ ५	६ ७	१
बोल	तिं तिं ना	धिं ना	धिं ना	तीं
ताली/खाली	0	७	2	0

(आजाद, 595)

दक्षिण भारतीय ताल पद्धति में मिश्र चाँपू (तकिट तक धिमी) जैसा है परन्तु इस ताल में सब घातम् में करते हैं '

5. प्र ताल

'जति ताल' और 'प्र ताल' ७ मात्रा के होकर भी इन दोनों ताल के मिठास में अंतर दिखाई देता है। कार्तिक नाच में वाणासुर की तपस्या के समय, महादेव और पार्वती के वन- विहार आदि नृत्य में 'प्र ताल' बजाया जाता है। ऐसे ही नाच के समय प्रत्येक दिन समापन तथा विसर्जन के समय में भी 'प्र ताल' में ही खिँ वाद्य का प्रयोग किया जाता है।

मात्राः ७, विभागः ३(२+२+३), तालीः २(१ और ३), खालीः १(५)

मात्रा	१ २	३ ४	५ ६ ७	१
ताली/खाली	तिं	तिं	छु	तिं

यह ताल जति ताल के जैसा हि 7 मात्रा होकर भि अलग प्रकृति का है। मात्राओं का आगे पीछे होने का कारण ताल करते समय का अभिव्यक्ति भिन्न हो जाता है।

6. अष्ट्रा ताल / ब्रम्ह ताल :-

ऐसी मान्यता है की 'अष्ट्रा ताल' का श्रवण करने से विभिन्न रोग का नाश होता है। कार्तिक नाच में विष्णुज्वर और शीतांनज्वर के युद्ध प्रदर्शन के समय दमोखिँ में 'अष्ट्रा ताल' में नृत्य किया जाता है।

मात्राः १०, विभागः ५ (२+२+२+२+२), तालीः २ (१, ५ और ७), खालीः १ (५)

मात्रा	१ २	३ ४	५ ६	७ ८	९ १०	१
ताली/ खाली	तिं	छु	तिं	तिं	छु	तिं

इस ताल का संरचना उत्तर भारतीय ताल पद्धति सुलताल से मेल खाता है।

मात्राः १०, विभागः ५(२+२+२+२+२), तालीः २(१, ५ और ७), खालीः १(५)

मात्रा	१ २	३ ४	५ ६	७ ८	९ १०	१
बोल	धा धा	दिन ता	किट धा	तिट कता	गदि गिन	धा
ताली/ खाली	७	0	2	3	0	७

(आजाद, 596)

7. चौ ताल

इस ताल को दुर्लभ एवं कठिन ताल के रुप में जाना जाता है। कार्तिक नाच में जब कृष्ण और महादेव के युद्ध के समय संसार प्रलय के अवस्था में पहुँचने लगता है उसी समय स्वयं धरती माता प्रकट होकर कृष्ण और महादेव दोनों को एक बनाकर हरिशंकर के रूप देती है। हरिशंकर के नृत्य के समय 'चौ ताल' बजाया जाता है।

मात्राः १२, विभागः ५(२+२+२+२+२+२), तालीः ४ (१, ५, ७ और ९),

खालीः २(३ और ११)

मात्रा	१ २	३ ४	५ ६	७ ८	९ १०	११ १२	१
ताली/ खाली	तिं	छु	तिं	तिं	तिं	छु	तिं

यह उत्तरी ताल पद्धति में चौताल १२ मात्रा का ही होता है परन्तु ताली और खाली करने का क्रिया भिन्न है।

8. गरह ताल/माथ ताल/धंलजति ताल/गन्धः ताल

ऊपर उल्लेखित इन तालों के नाम भिन्न है, परन्तु ताल पद्धति एक ही प्रकार की है। कार्तिक नाच में महादेव गण के प्रवेश में 'धंलजति ताल' में नृत्य होता है। जब श्री विष्णु वराह अवतार धारण करते है तब 'गन्धः ताल' में नृत्य प्रस्तुत होता है।

मात्राः १४, विभागः ७ (२+२+२+२+२+२+२), तालीः ४(१, ३, ७ और ११),

खालीः ३(५, ९ और १३)

मात्रा	१ २	३ ४	५ ६	७ ८	९ १०	१ १ १२	१ ३ १४	१
ताली/ खाली	तिं	तिं	छु	तिं	छु	तिं	छु	तिं

यह उत्तरी ताल पद्धति में धमार ताल और आड़ा चौताल ही होता है परन्तु ताली और खाली करने का क्रिया भिन्न है।

9. ग्वारा

''एउटै गीतमा आविच्छिन्न रुपमा विभिन्न तालहरुको संयोजन गरी रचिएको संगीतलाई 'ग्वारा' भनिन्छ जसमा नेवाः संगीतको एउटा अनुपम मौलिकता रहेको पाइन्छ।''(गुरुवाचार्य, बि.सं 2070, पृ. 77) अर्थात् एक गीत में आविच्छित्र रुप में विभिन्न तालों के संयोजन से रचना किये गये संगीत को ग्वारा कहते हैं। साधारण अर्थ में किसी एक राग की रचना में दो या दो से अधिक तालों के क्रमानुसार समिश्रण से बना हुआ ताल 'ग्वारा ताल' होता हैं। ग्वारा में जितने ताल के मिश्रण होता से उसी हिसाब से नाम होता है।

दो तालों का समिश्रण - दोमाँ

तीन तालों का समिश्रण - तिमाँ

क्रमशः चैमाँ, पञ्चमाँ, छः माँ, सातमाँ, आठमाँ, नवमाँ दशमाँ एघारमाँ र बार्हमाँ

ऐसे कुल बारह तक होते है। इसमें आवर्तन के अनुरूप नाम दिया गया है।

8 आवर्तन का रचना - माथेमा

8 आवर्तन से कम का रचना - तुत्ता

8 आवर्तन से ज्यादा का रचना - बाधा

ग्वारा बजाते समय इसका ६ स्टेप होता है।

मात्वा

मात्वा

ल थक्याऊ

कच्चा मात्वा

घो

संगीत थक्यागु / कच्चा मात्वा

कार्तिक नाच में उषाहरण लीला अन्तर्गत कृष्ण और बाणासुर का युद्ध, अनिरुद्ध और उषा के शृंगार आदि में 'ग्वारा ताल' में नृत्य होता है। वाद्य गुरु प्रद्युम्न कृष्ण श्रेष्ठ के अनुसार–''कार्तिक नाच के मुख्य अवतार का नृत्य नृसिंह नाच भी पहले पनि 'ग्वारा ताल ' में ही करते थे परन्तु अभी यह परम्परा लोप गई है।'' उषाहरण लीला अन्तर्गत देवी प्याखं 'महारुद्र ग्वारा' में नृत्य किया जाता है, जो निम्नलिखित है–

''म्ये - ॥ राग - कौसिक ॥ ताल - धंलजति तिमाँ ॥

धंलजति ताल - हा दे महारूद्र भईरब नारायण चण्डी

एक ताल - मातृका जोगिनी संग विराजे ॥

पलिमाँ ताल - सो विजयानन्द गावे ॥'' (श्रेष्ठ, 243)

ऊपर उल्लेखित 'महारुद्र ग्वारा' में तिमाँ अर्थात् तीन तालों का सम्मिश्रण है। प्रारंभ में 'धंलजति ताल' 14 मात्रा, मध्य में 'एक ताल' 6 मात्रा और अन्त में 'पलीमाँ ताल' 6 मात्रा का है।

'ग्वारा' दक्षिण भारतीय संगीत पद्धति में रागमालिका और तालमालिका के तरहा होता है। संरचना के हिसाब से कुछ भिन्न है। दक्षिण भारतीय ताल पद्धति का और एक महत्त्वपूर्ण विशेषता यह है की इसमें एक ही रचना में विभिन्न तालों का सम्मिश्रण भी होता है, जिसको तालमालिका कहते हैं। तालमालिका के कारण ही इस ताल पद्धति में विविधता पाई जाती है।

निष्कर्ष

प्रत्येक स्थान का अपना भौगोलिक वातावरण होता है। हमारी भाषा, रीति-रिवाजों, संस्कृति आदि पर इसका अपना प्रभाव पड़ता है। जिसका संगीत पर सीधा प्रभाव पड़ता है। यही कारण है कि एक स्थान का संगीत दूसरे स्थान के साथ बदलता रहता है। इस संगीत कुछ भारतीय संगीत का प्रभाव भी देखने को मिलता है, क्योंकि नेपाल और भारत का प्राचीन

समय से सांस्कृतिक सम्बन्ध प्रगाढ़ रहे हैं। नेपाल भारत के उत्तर भाग से जुदा है इसलिए उत्तरी ताल पद्धति का ज्यादा प्रभाव देखने को मिलाता है। दक्षिणी भारतीय ताल में जैसा अंग, जाती आदि का प्रयोग नहीं होता है परन्तु मालिका के साथ समानता को देखने को मिलता है। प्रत्येक ताल की अपनी प्रकार की विशेषताएँ होती हैं और एक ताल के संरचना दूसरे ताल के संरचना से अलग होती है। इसलिए ताल का चयन विभिन्न परिस्थितियों, वातावरण, कथानक आदि के आधार पर किया जाता है, जिस से रस का उत्पादन होता है। कार्तिक नाच में भी ताल का चयन उसी तरह किया जाता है। और एक बात ताल को प्रयोग करते समय व्यवस्थित तरीके से मौलिकता पर ध्यान देना बहुत महत्त्वपूर्ण है। इस बात से इनकार नहीं किया जा सकता है कि समय और परिस्थितियों के कारण यह नाच और इसके ताल पद्धति में भी बहुत बदल गया है। इसलिए हमारे लिए यह आवश्यक है कि हम पहले की तरह इस नाच पर शोध करें, और परिणामों को लिखित, वीडियोग्राफी, फोटोग्राफी आदि के माध्यम से संरक्षित किया जा सकता है। और भले ही वे पहले की तरह उसी रूप में विकसित न हो सकें, जो भी वर्तमान स्थिति में है। इसी स्तिथि का संरक्षित हो।

सन्दर्भ सूची

पुस्तक

1. गुवार्चार्य, मनोहर गोपाल, नेपाली संगीतको विकासक्रम(खोज तथा संग्रह), ललितपुर, ललितपुर संस्कृति संवर्धन केन्द्र, (वि.सं. 2070)
2. महर्जन, राजेन्द्र, हाम्रो सांस्कृतिक पहिचान तथा परम्परागत बाजाहरू, ललितपुर, श्री जट्टाधारी नित्यनाथ एकीकृत बाजं खलः (वि.सं 2076)
3. मानन्धर, त्रिरत्न, हादे दाफाया म्हसीका व म्येया स्वरलिपि, काठमांडौ, युनिवर्सल प्रिन्ट कन्सार्न, (वि.सं. 2071)
4. यमन, अशोक कुमार, संगीत रत्नावली, चण्डीगढ़, अभिषेक पब्लिकेशन, (सन् 2023)
5. 'आजाद', पं. तीरथराम, कत्थक ज्ञानेश्वरी, दिल्ली, नटेश्वर कला मंदिर, 2008
6. श्रेष्ठ, हरिमान, कात्ति प्याखँ कार्तिक नाच, ललितपुर, ज्येष्ठ नागरिक समाज-नेपाल, (वि.सं. 2066)

साक्षात्कार

1. कार्तिक नाच के गुरु हरीमान श्रेष्ठ, साक्षात्कारकर्ताः स्वजन रघुवंशी, 16 दिसम्बर 2022
2. दाफा गुरु त्रिरत्ना मानन्धर, साक्षात्कारकर्ताः स्वजन रघुवंशी, 25 जुलाई 2023
3. कार्तिक नाच के वाद्य गुरु प्रधुम्न कृष्ण श्रेष्ठ साक्षात्कारकर्ताः स्वजन रघुवंशी, 27 मार्च 2024